Investment Function

अर्थव्यवस्था चाहे पूँजीवादी हो या मिश्रित अर्थव्यवस्था राष्ट्रीय स्तर पर उत्पादन, आय एवं रोजगार निर्धारण में निवेश महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। निवेश का अर्थ वास्तविक विनियोग होता है। अर्थात निवेश का अर्थ वह विनियोग है जिसके द्वारा पूँजीगत पदार्थों जैसे मशीनें, नये कारखाने, नयी सड़क, पुल आदि के भण्डारों में वृद्धि किया जाय। पीटरसन के अनुसार "निवेश में उत्पादन के टिकाऊ यन्त्रों नए निर्माण तथा स्टॉक में होने वाले परिवर्तन के खर्च को शामिल किया जाता है।" अर्थात निवेश का मतलब है वस्तुओं के वर्तमान स्टॉक में वृद्धि करना।

अगर Q = पूँजी, I = निवेश, Δ = डेल्टा वृद्धि

$$I = \Delta Q$$

किसी पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में पूर्ण रोजगार के लिए निवेश एक आवश्यक शर्त तथा समृद्धि की कुंजी होती है। सभी विचारों के अर्थशास्त्री इस तथ्य को स्वीकार करते है और आधुनिक अर्थशास्त्री तो इसे मूलभूत सिद्धान्त मानते है। लेकिन पूर्ण रोजगार को निरन्तर बनाये रखने के लिए शुद्ध निवेश ही नहीं बल्कि उसकी बढ़ती हुई दर का होना भी जरूरी है।

निवेश को दो भागों में बाँटा जाता है।

1. प्रेरित निवेश (Induced Investment)
2. स्वायत्त निवेश (Autonomous Investment)

Induced Investment

प्रेरित निवेश अर्थव्यवस्था में आय एवं लाभ की मात्रा पर निर्भर करता है। आय का ऊँचा स्तर उपभोग माँग बढ़ता है और जिससे उत्पादक लाभ की ऊँची प्रत्याशा में निवेश को बढ़ाते है। प्रेरित निवेश एवं आय के स्तर में धनात्मक सम्बन्ध होता है। यह आय लोचात्मक होता है। अर्थात आय एवं लाभ बढ़ने की प्रत्याशा प्रेरित निवेश को बढ़ाती है और इसके विपरीत आय एवं लाभ घटने की प्रत्याशा प्रेरित निवेश को घटाती है। प्रेरित निवेश का ब्याज दर (r), लाभ दर (π) तथा पूँजी की

मात्रा (Q) से भी गहरा सम्बन्ध है। ब्याज दर बढ़ने पर निवेश प्रेरित होकर बढ़ जाता है तथा ब्याज दर घटने के विपरीत ब्याज दर बढ़ा देने पर निवेश हतोत्साहित हो जाता है। अर्थात निवेश तथा ब्याज दर में विपरीत सम्बन्ध होता है।

निवेश तथा लाभ दर में सीधा सम्बन्ध होता है। लाभ दर बढ़ता है तो प्रेरित निवेश बढ़ जाता है जबकि लाभ दर घटता है तो प्रेरित निवेश घट जाता है।

निवेश तथा पूंजी की मात्रा के बीच सीधा सम्बन्ध है। पूंजी की मात्रा बढ़ने पर निवेश प्रेरित हो बढ़ जाता है तथा पूंजी की मात्रा घटने पर निवेश हतोत्साहित हो जाता है। प्रेरित निवेश को सूत्र से प्रदर्शित किया जा सकता है —

$$I_2 = f(r, \pi, Q)$$

I_2 = प्रेरित निवेश, r = ब्याज दर, π = लाभ दर

Q = पूंजी की मात्रा

प्रेरित निवेश को चित्र द्वारा भी प्रदर्शित किया जा सकता है-

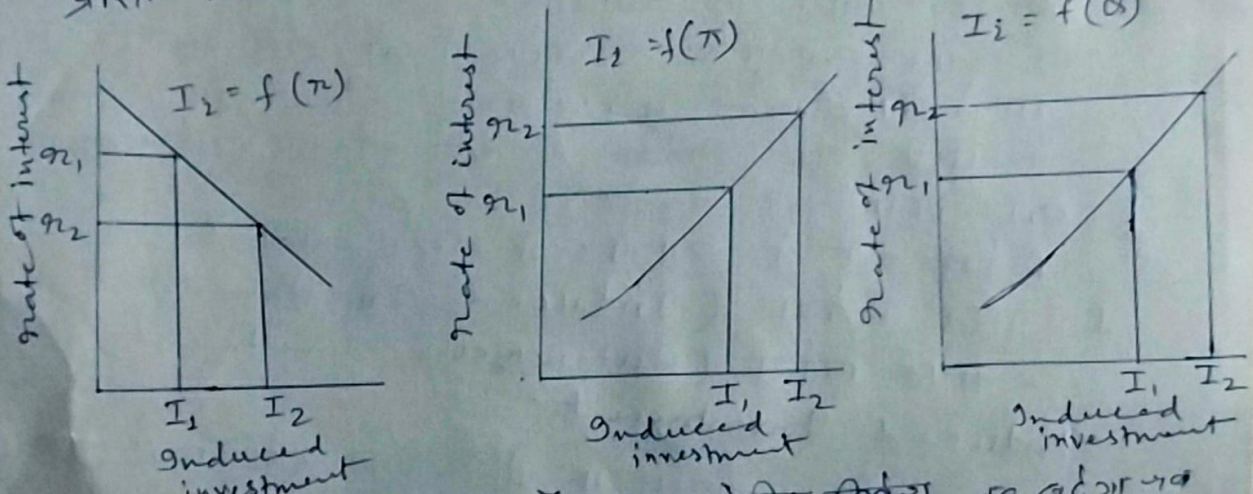

उपर के चित्र से स्पष्ट है कि प्रेरित निवेश तब बढ़ेगा जब ब्याज दर में कमी की जाए, लाभ दर में वृद्धि हो तथा पूंजी की मात्रा बढ़ायी जाए।

निवेश निर्णय

निवेश निर्णय 2 बातों पर निर्भर करती है।

1. पूंजी की सीमान्त उत्पादकता (Marginal efficiency of capital)
2. ब्याज दर (Rate of Interest)

1. पूंजी की सीमान्त उत्पादकता (Marginal Efficiency of Capital)

पूंजी की सीमांत उत्पादकता अतिरिक्त निवेश से प्राप्त होने वाले लाभ की सम्भावना है। अर्थात पूंजी की सीमान्त उत्पादकता किसी पूंजीगत पदार्थ की एक अतिरिक्त इकाई का अनुमानित लाभ है, उसकी लागत की तुलना में, मिलने वाले लाभ की अनुमानित दर है।

"The marginal efficiency of capital is expected rate of return of an additional unit of capital goods over its cost."

यदि एक पूंजीगत वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई की पूर्ति कीमत 10,000 रुपये है तथा उससे प्रतिवर्ष होने वाली प्रत्याशित लाभ 1,000 रुपये है तो पूंजी की सीमान्त उत्पादकता

$$MEC = \frac{1,000}{10,000} \times 100 = 10\%$$ होगी।

इसप्रकार पूंजी की सीमान्त उत्पादकता को शुद्ध लाभ की प्रत्याशित दर से होता है जिसे प्रतिशत के रूप में व्यक्त किया जाता है। MEC को सूत्र से दर्शाया जा सकता है-

$$MEC = \frac{\text{प्रत्याशित आय } (Y)}{\text{लागत या पूर्ति कीमत } (P)}$$

~~प्रतिशत दर~~ प्रत्याशित दर के रूप में व्यक्त करने के लिए इसको 100 से गुणा कर दिया जाता है।

अतः $$MEC = \frac{Y}{P} \times 100$$

उपयुक्त सूत्र के आधार पर विभिन्न पूर्ति कीमतों और भावी आयों पर विशेष सम्पत्ति की पूंजी की सीमान्त उत्पादकता का अनुमान लगाया जाता है।

MEC

↓ Prospective yield (प्रत्याशित आय)

↓ Supply price (पूर्ति कीमत)

प्रत्याशित आय (Prospective yield)

प्रत्याशित आय से आशय पूंजी की उस कुल शुद्ध आय से है जिसे वह सम्पत्ति या मशीन अपने सम्पूर्ण जीवन